Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 45-48

बालगंगाधर तिलक के राजनीतिक विचार

चेनाराम*

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान राजकीय बांगड़ महाविद्यालय, डीडवाना।

*Corresponding Author: chenarammahala@gmail.com

Citation: *चेनाराम. (2025). बालगंगाधर तिलक के राजनीतिक विचार. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 45–48.*

सार

बाल गंगाधर तिलक को उनकी निःस्वार्थ देशभक्ति, अदम्य साहस, स्वतंत्र और सबल राष्ट्रीय प्रवृत्ति के कारण स्वाधीनता आंदोलन के अग्रणी नेताओं में माना जाता है। डॉ.आर.सी मजूमदार लिखते है, ''अपने देश प्रेम तथा अथक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप बाल गंगाधर तिलक लोकमान्य कहलाये जाने लगे और उनकी एक देवता के समान पूजा होने लगी। वे जहां कहीं भी जाते थे, उन्हें राजकीय समान तथा स्वागत प्राप्त होता था।'' तिलक के 1889 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता लेने के साथ ही उनके राजनीतिक विचारों के क्रम का प्रारम्भ होता है। उन्होंने देश की सामान्य जनता को कांग्रेस के साथ जुड़ने तथा कांग्रेस को निरंतर सक्रिय संस्था बनाये रखने पर जोर दिया। सन् 1889–94 के वर्शो में तिलक भी उदारवादी विचारधारा के समर्थक थे। उन्होंने इन वर्षों में कांग्रेस के उदारवादी कार्यक्रम और मार्ग का समर्थन किया और वे इस बात को स्वीकार भी करते थे कि कांग्रेस ने उदारवादी नीतियों से अनेक उपलब्धियां प्राप्त की है। लेकिन उन्होंने राजनीतिक चिंतन का मूलाधार उदारवादियों से भिन्न था, अतः वे अधिक समय तक उदारवादी विचारधारा के साथ जुड़े नहीं रहे।

शब्दकोश: *सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी, बहिष्कार, साम्राज्यवाद।*

प्रस्तावना

तिलक का राष्ट्रवाद

तिलक का राष्ट्रवाद अंशतया पुनरुत्थानवादी और पुनर्निमाणवादी था। उन्होंने वेदों तथा गीता से आध्यात्मिक शक्ति एवं उत्साह ग्रहण करने का संदेश दिया। मराठा में उन्होंने लिखा है, ''सच्चा राष्ट्रवाद पुरानी नींव पर ही निर्माण करना चाहता है। जो सुधार पुरातन के प्रति घोर असम्मान की भावना पर आधारित है, उसे सच्चा राष्ट्रवादी रचनात्मक कार्य नहीं समझता। हम अपनी संस्थाओं को ब्रिटिश ढांचे में नहीं ढ़ालना चाहते, सामाजिक तथा राजनीतिक सुधार के नाम पर हम उनका अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते।''

सांस्कृतिक मार्ग से राष्ट्रवाद का विकास

तिलक कार्लायल और इमर्सन की इस धारणा से पूर्णतया सहमत थे कि जो राष्ट्र अपने नायकों का सम्मान करना नहीं जानता, वह जीवित नहीं रह सकता और विकास नहीं कर सकता। इसे हेतु तिलक द्वारा

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

'गणपति उत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' प्रारंभ किए गए। उनका उद्देश्य इनके माध्यम से स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान की भावना जागृत करना था।

तिलक ने भारतीयों में यह भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया कि उन्हें गीता और वेदों के महान संदेशों से नई चेतना ग्रहण करना चाहिए। यदि भारत में सच्ची राष्ट्रीयता का प्रसार करना है तो उसके लिए आवश्यक है कि प्राचीन संस्कृति का पुनर्जागरण किया जाए। तिलक की मान्यता थी कि राष्ट्रवाद एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक धारणा है।

उनका कहना था कि प्राचीन काल में आदिम जातियों के मन में अपने कबीले के प्रति जो भक्ति भावना विद्यमान थी उसी का आधुनिक नाम राष्ट्रवाद है। तिलक की मान्यता थी की जो राष्ट्रवाद राष्ट्रीय एकता पर आधारित होता है वही सच्चा और स्वस्थ राष्ट्रवाद है। उन्होंने भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक तत्वों पर अधिकाधिक बल दिया। इस हेतु तिलक ने सार्वजनिक उत्सवों को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने 'केसरी' में लेख लिखकर 'गणपति पूजा' की तुलना यूनान के ओलम्पियन और पिथियन उत्सवों से की। तिलक की मान्यता थी कि इन उत्सवों का आयोजन प्रतीक स्वरूप है जिनसे राष्ट्रवाद की भावना पनपती है।

स्वराज्य – तिलक को समस्त राजनीतिक चिंतन का एक शब्द में व्यक्त किया जा सकता है और वह है 'स्वराज्य' तिलक की प्रेरणा का स्रोत प्राचीन भारतीय दर्शन था, जिसमें स्वराज्य को व्यक्ति का धर्म बतलाया गया है। तिलक का राष्ट्रवादी दर्शन आत्मा की सर्वोच्चता के वेदान्तिक आदर्श और मैजिनी, बर्क, मिल तथा विल्सन की धारणाओं का समन्वय था। तिलक के अनुसार स्वराज्य एक ईश्वरीय गुण है। विदेशी साम्राज्यवाद राष्ट्र की आत्मा का ही हनन कर देता है इसलिए उन्होंने विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष और भारत के लिए स्वराज्य की घोषणा की। तिलक ने विल्सन की 'आत्मनिर्णय की धारणा' को स्वीकार करते हुए भारत में इसके व्यावहारिक प्रयोग की मांग की थी।

1916 के पूर्व तक 'स्वराज्य' से तिलक का आशय पूर्ण स्वाधीनता की ऐसी स्थिति से था, जिसमें ब्रिटिश सम्राट के लिए कोई स्थान नहीं था। लेकिन तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए उन्होंने 1916 में इसे अधिक समयानुकूल और व्यावहारिक बना लिया। होमरूल आंदोलन के दौरान उन्होंने कहा कि ''स्वराज्य से अभिप्राय केवल यह है कि भारत के आंतरिक मामलों का संचालन और प्रबंध भारतवासियों के हाथों में हो। हम ब्रिटेन के राजा सम्राट को बनाए रखने में विश्वास करते हैं।'' उनके द्वारा इस स्थिति में अपनाए जाने का कारण यह भी था कि स्वराज की मांग को राजद्रोह से अलग किया जा सके और वह जेल से बाहर रहकर जनता को स्वराज्य के लिए प्रेरित व संगठित कर सकें।

तिलक के लिए स्वराज्य विचार मात्र नहीं था, अपितु यह उनका धर्म, जीवन और प्राण था। उनके अनुसार स्वराज्य के अभाव में कोई राष्ट्र औद्योगिक प्रगति नहीं कर सकता और कोई सामाजिक सुधार नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा कि ''मैं जिस स्वराज्य की मांग कर रहा हूं वह केवल हिंदू या मुसलमान के लिए नहीं होगा समस्त समुदाय के लिए होगा। तिलक ने न केवल स्वराज्य का नारा दिया वरन् तप, त्याग, समर्पण और निष्ठा के साथ जीवन के इस आदर्श की ओर बढ़े। तिलक अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास नहीं करते थे उनका मानना था कि कोई भी साम्राज्यवादी शक्ति शासित देश के हित में शासन नहीं करती।

साम्राज्यवाद का उद्देश्य शासित देश का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक शोषण करना होता है इसलिए अंग्रेजों की न्याय प्रियता में विश्वास करना विवेकपूर्ण नहीं है। तिलक उदारवादियों की पद्धति और साधनों से सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा ''अनुनय, आग्रह और प्रतिनिधिमंडल से कुछ नहीं होगा जब तक कि इसके पीछे ठोस शक्ति न हो।

नेविन्सन ने तिलक के लिए लिखा है कि ''अपने उद्देश्य के लिए नहीं वरन् उसे प्राप्त करने के उपायों के कारण उन्हें उग्रवादियों की उपाधि मिली है।'' देश के लिए स्वराज्य तिलक का एकमात्र लक्ष्य था इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तिलक ने तीन प्रभावशाली साधन बताएं – स्वदेशी, बहिष्कार (निश्क्रिय प्रतिरोध) और राष्ट्रीय शिक्षा।

तिलक ने केसरी में लिखा, ''हमारा राष्ट्र एक वृक्ष की तरह है जिसका मूल तना स्वराज्य है और स्वदेशी तथा बहिष्कार उसकी शाखाएं है।'' उदारवादी विचारक जहां स्वदेशी का समर्थन करते थे लेकिन बहिष्कार को अपनाने में संकोच करते थे वहीं तिलक का विचार था, ''जब आप स्वदेशी को स्वीकार करते हैं तो आपको विदेशी का बहिष्कार करना ही होगा।'' इस प्रकार तिलक के लिए बहिष्कार स्वदेशी का पूरक था। तिलक ने बहिष्कार को जन आंदोलन का रूप देकर इसे भारत के घर–घर तक पहुंचा दिया। तिलक स्वयं अपने हाथ से काते हुए सूत से अपने ही घर में स्वदेशी करघे से बने हुए वस्त्रो का उपयोग करते थे। तिलक मन वचन व कर्म से स्वदेशी थे।

तिलक ने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए 'गणपति उत्सव' को आधार बनाया। तिलक का मानना था कि शासन की नीति भारत के उद्योगों के संरक्षण की होनी चाहिए जबकि शासन ने 'स्वतंत्र व्यापार नीति' अपनाकर देश के उद्योगों को संकट में डाल दिया है। तिलक ने स्वदेशी व बहिष्कार को केवल आर्थिक पक्ष में ही नहीं रखा अपितु इसे एक जन आंदोलन का रूप देकर भारतीयों के मन और मस्तिष्क को स्वदेशी बनाना चाहा जिससे स्वाधीनता की भावना विकसित हो सके।

तिलक के बहिष्कार का आ ाय केवल विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार तक सीमित नहीं था बल्कि वे इसे 'ब्रिटिश शासन के बहिष्कार' के रूप में अपनाना चाहते थे, जिसमें शासन की नौकरियों, उपाधियों, अदालतों, सार्वजनिक समारोहों तथा कर अदा न करना सम्मिलित किया था। इस कारण तिलक के बहिष्कार को निष्क्रिय प्रतिरोध भी कहा गया। तिलक ने जनता से कहा कि, ''तुम्हें जानना चाहिए कि तुम उस शक्ति का एक महान तत्व हो जिससे भारत में प्रशासन चलाया जाता है। ब्रिटिश शासन रूपी यह शक्तिशाली यंत्र तुम्हारी सहायता के बिना नहीं चलाया जा सकता यदि तुममें सक्रिय प्रतिरोध की शक्ति नहीं है तो क्या तुममें आत्म त्याग और आत्म संयम की भी इतनी शक्ति नहीं है कि तुम अपने ही ऊपर शासन करने में विदेशी सरकार की सहायता न करो। यही बहिष्कार है। हम कर वसूल करने और शांति स्थापित करने में सहायता नहीं करेंगे।'' इस प्रकार तिलक बहिष्कार के माध्यम से जनता में ये चेतना जागृत करना चाहते थे कि ब्रिटिश सरकार हमारी सहायता के बिना एक दिन भी शासन नहीं कर सकती।

राष्ट्रीय शिक्षा

बाल गंगाधर तिलक ने आगरकर के साथ मिलकर महाराष्ट्र में शिक्षा आंदोलन चलाया। तिलक का मानना था कि तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र के लिए उपयुक्त नहीं थी उन्होंने शिक्षा के राष्ट्रीयकरण हेतु कुछ सुझाव दिए –

- शिक्षा को जन सामान्य के लिए सुलभ बनाया जाए।
- शिक्षा भारतीयों द्वारा और भारतीय उद्देश्यों को ध्यान में रखकरदी जाए।
- शिक्षा व्यक्तित्व के विकास व चरित्र निर्माण के साथ–साथ राष्ट्रीय जागृति का माध्यम बने।

तिलक का कहना था कि राष्ट्रीय शिक्षा से ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो सकेगा तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा का ऐसा पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया जो व्यावहारिक होने के साथ–साथ देश के विकास में सहायक हो। इस हेतु उनके द्वारा महाराष्ट्र में 'समर्थ विद्यालय' स्थापित किए गए।

- **औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अंग बने –** तिलक की शिक्षा में भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों पद्धतियों का समन्वय था उनका मानना था कि पाठ्यक्रम में औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा को स्थान दिया जाना चाहिए, जिसमें शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन बन सके।
- **धार्मिक शिक्षा पर बल –** तिलक का मानना था कि धार्मिक शिक्षा झगड़ों और पारस्परिक कलह को दूर करने का श्रेष्ठ मार्ग है इससे अनुशासन और परंपराओं के प्रति सम्मान का भाव जागृत होगा।
- **शिक्षा का माध्यम –** तिलक ने मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने पर बल दिया साथ ही उन्होंने एक राष्ट्रभाषा व लिपि का भी समर्थन किया। उनका मानना था कि देश की एकता के लिए एक राष्ट्रभाषा हिंदी व देवनागरी लिपि होनी चाहिए। तिलक ने राजनीतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का भाग बनाने की बात कही। राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से तिलक भारत में नवयुवकों से जन जागरण का कार्य करवाने की सोच रखते थे।

तिलक के राजनीतिक विचारों में हमें ऐसे व्यक्तित्व से परिचय होता है जो भारतीय स्वतंत्रता के लिए समर्पित हो, जिसने जनमानस के मन में स्वराज्य की अलख जगाने का कार्य किया। तिलक ने अपने विचारों के माध्यम से देश की जनता में स्वराज्य के प्रति आत्मविश्वास भर दिया था। उन्होंने जनता को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाया और विदेशी शासन का सहयोग न करने की अपील की जिसके कारण जनमानस पर उनके विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा व तिलक राष्ट्रीय पटल पर उभरे। तिलक को संपूर्ण भारतवर्ष में स्वराज का दूत समझा जाने लगा। इस प्रकार तिलक के राजनीतिक विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि तिलक ने अपना संपूर्ण जीवन स्वराज्य के लिए समर्पित कर दिया तथा जनमानस को इस हेतु जागृत करते हुए अंग्रेजी शासन का विरोध किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. पुखराज जैन, प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिके ानस आगरा 2020।
2. डॉ.वी.पी. वर्मा आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा 2000।
3. ओमप्रका ा गावा, भारतीय राजनीति विचारक मयुर पेपर वेक्स, नोएडा 2008।
4. डॉ. पुरूशोत्तम नागर, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2019
5. डॉ. बी.आर. पुरोहित, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी 2019.

❑❑❑